सुरेन्द्र नाथ सक्सेना

हस्तरेखा विज्ञान

हाथ की रेखाओं से भविष्य कथन

हस्तरेखा विज्ञान

हाथ की रेखाओं से भविष्य कथन

लेखक
सुरेन्द्र नाथ सक्सेना
पॉमिस्ट एण्ड न्यूमरलॉजिस्ट
(हस्तरेखा और अंकविद्या शास्त्री)

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

☎ 23240026, 23240027 • *फैक्स:* 011-23240028

E-mail: info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

शाखाः हैदराबाद

5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)

बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095

☎ 040-24737290

E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई

जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड

अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034

☎ 022-23510736

E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फ़ॉलो करें:

© कॉपीराइटः वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-505735-7-0

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

प्रकाशकीय

यह सत्य है कि भारतवर्ष को विश्व गुरु की संज्ञा दी गयी है। भारतवर्ष के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने विश्व को जो अनमोल उपहार भेंट किये हैं उनमें से एक हस्तरेखा विज्ञान भी है। महर्षि वाल्मीकि ने आज से 6-7 हजार वर्ष पूर्व हस्तरेखा शास्त्र पर 567 श्लोकों का एक ग्रन्थ लिखा था। भारत से ही यह ज्ञान तिब्बत, चीन, मिस्र और यूनान पहुँचा।

आधुनिक काल में हस्तरेखा ज्ञान को लोकप्रिय बनाने का श्रेय सुप्रसिद्ध हस्तरेखा शास्त्री कीरो (Cheiro) को जाता है। कीरो ने अपनी पुस्तक 'Language of Hand' में लिखा है कि वह भारत आये थे तथा भारत के पण्डितों से हस्तरेखा का ज्ञान सीखे थे।

हस्तरेखा विज्ञान एक गहन और दुरूह शास्त्र है। आवश्यकता है श्रद्धा के साथ मनन और अभ्यास की। प्रस्तुत पुस्तक **'हस्तरेखा विज्ञान'** इन्हीं सब समस्याओं को दूर करने के लिए प्रामाणिक रूप में तैयार की गयी है। पुस्तक की भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है जिससे प्रत्येक वर्ग का पाठक विषय को आसानी से समझ सके। जगह-जगह पर अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी दिया गया है जिससे किसी शब्द के विषय में कोई संशय न रहे। पुस्तक की प्रस्तुति में पाठकों की जिज्ञासाओं एवं ज्ञान की व्यापकताओं को भी ध्यान में रखा गया है। पुस्तक नवीनतम ज्ञान (Latest Knowledge) पर आधारित है। यह हस्तरेखा विज्ञान की पहली ऐसी पुस्तक है जिसमें हस्तरेखाओं के फलों की व्याख्या करते हुए ग्रहों के बुरे व हानिकारक प्रभावों से बचने के अचूक मनोवैज्ञानिक उपायों पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के लेखक सुरेन्द्र नाथ सक्सेना जाने-माने हस्तरेखा शास्त्री और अनेक मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक पुस्तकों के लेखक हैं।

यदि कुछ त्रुटियाँ रह गयी हों तो आप इन त्रुटियों के तरफ हमारा ध्यान आकर्षित कर अपना सत्परामर्श देंगे। आपके सत्परामर्श से ही हम ऐसी त्रुटियों का निराकरण कर सकेंगे। आपके सहयोग की अपेक्षा है।

हमें आशा ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप इस पुस्तक को पढ़कर अवश्य लाभान्वित होंगे।

समर्पण

यह पुस्तक सादर समर्पित है
विश्वप्रसिद्ध हस्तरेखा शास्त्री
जॉन वार्नर 'कीरो' को
(उन्हें काउण्ट लुइस हेमन भी कहते हैं।)
जिन्होंने भारतीय हस्तसामुद्रिक शास्त्र को
पूरे विश्व में प्रतिष्ठित किया।

दो शब्द

"आप निश्चय ही जीवन में सफलता व सुख पायेंगे। दिली कोशिश करने पर आप जो चाहेंगे, वह उचित रूप में, उचित समय पर आपको अवश्य मिलेगा।"

प्रिय पाठक! यह भविष्यवाणी मैं आपके इस एक्शन को देखकर लिख रहा हूँ कि आपने इस पुस्तक को उठा लिया है और पढ़ रहे हैं। यह भविष्यवाणी उसी तरह सच्ची है जैसे एक रसोइया चावल का एक दाना परखकर पूरे चावलों के बारे में बता देता है कि वे पक गये हैं, तैयार हो चुके हैं।

जी हाँ, आप सफलता पाने के लिए तैयार हो चुके हैं। क्यों?

क्योंकि आपके अन्दर उचित ज्ञान पाने की चाह है और इस चाह में ही वह इच्छाशक्ति (Will Power) है जो बड़ी-बड़ी समस्याओं और नाकामियों को महान सफलता में बदल देती है।

आपमें यह इच्छाशक्ति है तभी आप इन पंक्तियों को पढ़ रहे हैं।

ज्ञान शक्ति है और इस शक्ति का जो सदुपयोग करता है वही सफलता के सिंहासन का स्वामी बनता है। आलसी नहीं।

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आप अपनी खूबियों को भली प्रकार जान सकेंगे और कमियों को भी।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार सफलता का छोटा-सा सूत्र है,

अपनी कमियों को जानो और उन्हें दूर करो!

अपनी खूबियों को जानो, बढ़ाओ और उनका उपयोग करो।

आप अपनी कमियों को दूर कर, परमात्मा द्वारा दिये अपने स्वभाव व रुचि के अनुसार व्यापार, व्यवसाय या नौकरी कर ऊँची से ऊँची कामयाबी पाने की कोशिश करेंगे।

जहाँ दिली कोशिश है, वहीं कामयाबी है।

फिर देर कैसी? "शुभस्य शीघ्रम"

आपकी जीवन यात्रा आनन्दपूर्ण हो! शुभ हो!

—सुरेन्द्र नाथ सक्सेना

विषय-सूची

परिचय *11*

✶ प्राचीन भारत का अनमोल उपहार.. 11
✶ विज्ञान की कसौटी पर.. 12
✶ हाथों का विकास.. 12
✶ हस्तरेखा शास्त्र और परामनोविज्ञान (Palmistry & Parapsychology).........13
✶ हस्तरेखा शास्त्र की उपयोगिता (Utility of Palmistry)..........................14
✶ बुरे ग्रहों के प्रभाव से बचने के उपाय.. 15
✶ भविष्य की जानकारी से दुर्घटनाओं व आपत्तियों से बचाव...................... 17
✶ हस्तरेखाओं का अध्ययन और भविष्यवाणी सम्बन्धी सावधानियाँ............. 17
✶ भविष्य बताने में सावधानियाँ.. 18
✶ पुस्तक पढ़ने की विधि.. 20

अध्याय-1 हाथ का आकार-प्रकार 22

✶ हाथ (Hand)... 22
✶ हाथ का पृष्ठभाग (Back of the Hand)...22
✶ हाथों पर बाल (Hair on the Hand)... 22
✶ लम्बी अँगुलिया (Long Fingers).. 23
✶ हथेली (Palm)... 23
✶ हाथ के प्रकार (Types of Hands).. 23
✶ हाथों को देखते समय की सावधानियाँ... 29
✶ स्त्री और पुरुष के हाथ... 29
✶ हथेली और हाथ की अन्य विशेषताएँ.. 29
✶ छोटे और बड़े हाथ 30

अध्याय-2 हाथ का अँगूठा और अँगुलियाँ.. 31

✶ हाथ का अँगूठा... 31
✶ हथेली और अँगूठा 31
✶ अँगूठे की स्थिति (Position of the Thumb)..................................31
✶ अँगूठे की लम्बाई (Length of the Thumb) 32
✶ अँगूठे की बनावट (Formation of the Thumb) 32
✶ कठोरता या लचीलापन (Hard or Supple)...34

✶ अँगूठे के पर्व 34
✶ अँगूठे के अन्य प्रकार व गुण 35
✶ प्राचीन भारतीय हस्तसामुद्रिक के अनुसार गुण-दोष 35
✶ अँगूठों के झुकाव के आधार पर भाग्य वर्गीकरण 36

अध्याय-3 अँगुलियाँ और उनके गुण-दोष 37

✶ अँगुलियों के सन्धिस्थल और गाँठे (The Joints of Fingers & their Knots) . 37
✶ तर्जनी अँगुली (Index Finger)/पहली अँगुली/बृहस्पति की अँगुली 40
✶ मध्यमा अँगुली (Middle Finger) शनि की अँगुली 40
✶ अनामिका अँगुली (Ring Finger) सूर्य की अँगुली 41
✶ कनिष्ठिका अँगुली (Little Finger) बुध की अँगुली 41
✶ अन्दर की ओर मुड़ी अँगुलियाँ 42
✶ अँगुलियों के बीच खाली स्थान 43
✶ हाथ का प्रकार और अँगुलियों के फल 43
✶ अँगुलियों के पोरों पर चिह्न और उनके फल 43
✶ नाखून (Nails) और स्वास्थ्य 44
✶ रंगो की दृष्टि से पूरे हाथ का वर्गीकरण 46
✶ ताप (गरमी) की दृष्टि से हाथों का वर्गीकरण 47
✶ रेखाओं की दृष्टि से हाथ का वर्गीकरण 47

अध्याय-4 ग्रह क्षेत्र या पर्वत उनकी स्थिति तथा फल 49

✶ अधिक उठे/दबे ग्रह क्षेत्र 55
✶ हाथ के दो प्रमुख भाग 58
✶ मंगल का बड़ा त्रिकोण तथा चतुष्कोण एवं उसके फल 58
✶ सूर्य रेखा से बना त्रिकोण 58
✶ ऊपरी कोण 59
✶ मध्य कोण 60
✶ निचला कोण 60
✶ चतुष्कोण (Quadrangle) 60

अध्याय-5 हाथ की मुख्य रेखाएँ 62

✶ हाथ की मुख्य रेखाओं का संक्षिप्त विवरण 62
✶ टिप्पणी 67

अध्याय-6 रेखाओं के प्रकार तथा शुभ-अशुभ फल 68

✶ रेखा का टूट जाना 70
✶ शृंखलाबद्ध या जंजीरदार रेखा 70
✶ फुँदनी 70
✶ दो रेखाएँ 70

अध्याय-7 हाथ के विशेष चिह्न 71
- ✶ 1. सितारा (Star) 71
- ✶ 2. क्रॉस (Cross) 73
- ✶ 3. चतुष्कोण 74
- ✶ 4. द्वीप (Island) 75
- ✶ 5. मछली या मत्स्य रेखा (Fish) 75
- ✶ 6. त्रिकोण (Triangle) 75
- ✶ 7. त्रिशूल (Trident) या वाण की नोक 75
- ✶ 8. जाली (Grill) 76
- ✶ 9. क्रास बार (Cross Bar) 76
- ✶ 10. गोला (Circle) 76
- ✶ टिप्पणी 76
- ✶ रहस्यमय क्रॉस (La Croix Mystique) 76

अध्याय-8 आपका जीवन और आपका स्वास्थ्य 78
- ✶ जीवन रेखा (The Line of Life) 78
- ✶ जीवन रेखा का प्रारम्भ 80
- ✶ जीवन रेखा तथा मंगल रेखा 83
- ✶ जीवन रेखा तथा स्वास्थ्य रेखा 88
- ✶ जीवन रेखा का अन्त 89
- ✶ विज्ञान और हस्तरेखाएँ 89

अध्याय-9 आयु जानने की विधियाँ 92
- ✶ जीवन रेखा से आयु पता लगाना 92
- ✶ भाग्य रेखा से आयु पता लगाना 93

अध्याय-10 जीवन में शुभ-अशुभ यात्राएँ और दुर्घटनाएँ 95
- ✶ दुर्घटनाएँ (Accidents) 97

अध्याय-11 सबसे महत्त्वपूर्ण रेखा-मस्तिष्क रेखा 99
- ✶ मस्तिष्क रेखा सम्बन्धी सामान्य लक्षण 101
- ✶ द्वीप 102
- ✶ चतुष्कोण 102
- ✶ मस्तिष्क रेखा का हाथ के आकार-प्रकार से सम्बन्ध 103

अध्याय-12 हत्या करने की सम्भावना बताने वाले लक्षण 106
- ✶ आत्म हत्या की सम्भावना बताने वाले लक्षण 106
- ✶ पागलपन की सम्भावना बताने वाले लक्षण 107
- ✶ टिप्पणी 107

अध्याय-13 आपकी हृदय रेखा (The Line of Heart) 108

अध्याय-14 हृदय, मस्तिष्क और विवाह रेखाएँ 114

- ✶ विवाह की आयु.. 121
- ✶ सन्तान रेखाएँ 121

अध्याय-15-धन-सम्पत्ति और कैरियर 122

- ✶ भाग्य रेखा (The Line of Fate)... 122
- ✶ भाग्य रेखा का अन्त... 126

अध्याय-16 सूर्य या विद्या रेखा (The Line of Sun or Apollo)................ 128

अध्याय-17 प्राचीन प्रमुख हस्तरेखा-योग 134

उपसंहार - सफलता और सकारात्मक जीवन शैली 144

परिचय

प्राचीन भारत का अनमोल उपहार

भारतवर्ष के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने विश्व को जो अनमोल उपहार भेंट किये हैं उनमें से एक हस्तरेखा शास्त्र (Palmistry) भी है। इन महान ऋषियों में भृगु, कार्तिकेय, गर्ग, गौतम और वाल्मीकि के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। महर्षि वाल्मीकि ने आज से लगभग 6-7 हजार वर्ष पूर्व पुरुष हस्तरेखा शास्त्र पर 567 श्लोकों का एक ग्रन्थ लिखा था। भारत से यह ज्ञान तिब्बत, चीन, मिस्र और यूनान पहुँचा। प्राचीन यूरोप में यह ज्ञान वहाँ की घुमन्तू जाति जिप्सियों द्वारा फैला। जिप्सी आर्यों के वंशज माने जाते हैं जो भारत के निवासी थे।

ऐसा उल्लेख मिलता है कि यूनान (ग्रीस) के प्रसिद्ध व्यक्ति हिजानुस (Hispanus) को हर्मज (Hermes) की वेदी पर हस्तरेखा शास्त्र की पुस्तक मिली थी जो उसने सिकन्दर को भेंट की थी। ऐलोपैथिक चिकित्सा के जन्मदाता हिप्पोक्रेटस् अपने रोगियों की बीमारियों के मूल कारणों को जानने के लिए उनके हाथों और रेखाओं का भी अध्ययन करते थे।

हस्तरेखा शास्त्र का सम्बन्ध भारतीय सामुद्रिक शास्त्र, हस्तसामुद्रिक और फलित ज्योतिष से भी है। सामुद्रिक शास्त्र में व्यक्ति के पूरे शरीर के आकार-प्रकार व उन पर पड़े चिह्नों द्वारा उसका भाग्य जाना जाता है। फलित ज्योतिष में ग्रहों की गतियों व्यक्ति के जन्म का समय व स्थान के आधार पर ग्रहों की स्थितियों के अनुसार उसका भविष्य जानते हैं। इन शास्त्रों के साथ सम्बन्ध होते हुए भी 'हस्तरेखा शास्त्र' अपने आपमें एक स्वतन्त्र शास्त्र है।

आधुनिक काल में हस्तरेखा शास्त्र को लोकप्रिय बनाने का श्रेय सुप्रसिद्ध हस्तरेखा शास्त्री (Palmist) कीरो (Cheiro) को जाता है। उनका जन्म आयरलैण्ड में हुआ था। उनका वास्तविक नाम जान वार्नर था। वह काउण्ट लुइस हेमन (Count Louis Hamon) नाम से जाने जाते थे। कीरो ने अपनी पुस्तक 'लैंग्विज ऑफ हैण्ड' (Language of Hand) में स्वीकार किया है कि वह भारत आये थे और उन्होंने यहाँ के पण्डितों से हस्तरेखा शास्त्र का ज्ञान सीखा था। वह हिन्दुओं के दार्शनिक विचारों से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने उन विचारों को आगे बढ़ाया। वह

हिन्दू सभ्यता तथा संस्कृति से बहुत प्रभावित थे और इसके लिए उन्हें चर्च तथा पादरियों की कटु आलोचनाओं तथा घोर विरोध का सामना करना पड़ा परन्तु वे अपने निश्चय पर दृढ़ रहे। हस्त सामुद्रिक में से हस्तरेखा शास्त्र रूपी रत्न को बाहर निकालने तथा पूरे विश्व में उसका प्रचार करने के लिए काउण्ट लुइस हेमन निश्चय ही धन्यवाद के पात्र हैं।

भारतीय पामिस्ट्री (Palmistry) या हस्तरेखा शास्त्र को हस्तसामुद्रिक दो कारणों से कहते थे। प्रथम यह सामुद्रिक-शास्त्र से निकाला गया है, दूसरे हमारे हाथों में ही ज्ञान का वह समुद्र स्थित है जिसे जानकर हम अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं।

विज्ञान की कसौटी पर

आज का विज्ञान यह सिद्ध कर चुका है कि व्यक्ति के नाखूनों, अँगुलियों तथा हथेली के आकार-प्रकार एवं रंग से उसके रोग का ठीक-ठीक पता लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त एक विचित्र ध्यान देने योग्य तथ्य यह पाया गया कि किसी भी व्यक्ति की अँगुलियों, अँगूठे और हथेली पर बनी रेखाएँ तथा चिह्न विश्व के किसी भी दूसरे व्यक्ति से नहीं मिलते। यहाँ तक कि जुड़वाँ बच्चों में भी ये चिह्न व रेखाएँ अलग-अलग प्रकार की होती हैं। इसीलिए व्यक्ति के अँगूठे की छाप को उसकी पहचान का प्रामाणिक सबूत माना जाता है।

हाथों का विकास

मनुष्य की अन्य सभी जीवों से उच्चता उसके हाथों के कारण है। एक स्तनपायी जीव होते हुए भी केवल वही पैरों के बल चलता और प्राय: सभी कार्य हाथों से करता है। मनुष्य का यह विकास होने में लाखों-करोड़ों वर्ष लग गये। उसके पूर्वजों ने जब दो पैरों से चलना शुरू किया तो उनके आकार में सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन मेरुदण्ड का सीधा होना तथा हाथों से अधिकाधिक कार्य करना था। सोच-विचार कर किये जाने वाले कार्यों के चेतना केन्द्र हमारे सिर (मस्तिष्क) में तथा अपने-आप होने वाले कार्यों के चेतना केन्द्र मेरुदण्ड में स्थित हैं। हाथों से सभी कार्य करने के कारण मस्तिष्क तथा मेरुदण्ड के स्नायुकेन्द्रों का हाथों के स्नायुकेन्द्रों से जुड़ना और बनना शुरू हुआ। इसके फलस्वरूप हाथों के स्नायुओं और मानव मनो-मस्तिष्क के चेतन, उपचेतन एवं अचेतन केन्द्रों के बीच सम्बन्ध स्थापित हुआ। स्नायुओं का यह सम्बन्ध इतना सूक्ष्म है कि मस्तिष्क में आने वाले छोटे-छोटे विचारों का प्रभाव भी तत्काल हाथ पर प्रकट होने लगता है। इन प्रभावों तथा हाथ द्वारा किये जाने वाले कार्यों से ही हाथ की रेखाओं आदि का विकास हुआ यही नहीं वरन् हमारे आन्तरिक अंगों की क्रियाओं के प्रभाव हाथों व हस्तरेखाओं पर

पड़ते है। हाथ में जितने स्नायुकेन्द्र हैं उतने किसी अन्य अंग में नहीं, जिस प्रकार प्रत्येक शिशु अपने माता-पिता से अपने जीन्स (वंशागत विशेषताओं के सूक्ष्म अंश) लेकर आता है, उसी प्रकार उनकी हस्तरेखाओं का प्रभाव भी उसकी हस्तरेखाओं पर पड़ता है। ये सभी तथ्य आज विज्ञान की कसौटी पर खरे उतर चुके हैं। अतः इन तथ्यों का सूक्ष्म अध्ययन और विश्लेषण करके उसका वर्तमान और भूतकाल ही नहीं वरन् भविष्य भी बताया जा सकता है क्योंकि भविष्य व्यक्ति के भूतकाल में ही छिपा होता है।

हस्तरेखा शास्त्र और परामनोविज्ञान (Palmistry & Parapsychology)

सृष्टि निर्माता ने मनुष्य का भाग्य उसकी हस्तरेखाओं में लिखकर एक महान रहस्यमय सत्य को उजागर किया है। हमारा भाग्य हमारे हाथों अर्थात् कर्मों से बनता है। कुछ हस्तरेखा शास्त्रियों द्वारा यह माना जाता है कि पूर्व जन्मों में किये कर्मों से अर्जित फल जो हमारे अचेतन मन में जमा होते हैं, वे भी हस्तरेखाओं में प्रकट हो जाते है। अभी इस जन्म में हम जिस स्थिति में हैं, वह हमारे पूर्वजन्म के कर्मफलों तथा वर्तमान जीवन में किये जानेवाले कर्मों का ही फल है।

यद्यपि कुछ धर्मों में पूर्वजन्म की धारणा को नहीं माना जाता परन्तु संसार में एक नहीं वरन् अनेक परामनोवैज्ञानिकों ने निष्पक्ष होकर जो खोजें की हैं उनसे उपर्युक्त तथ्य सही पाया गया है, उदाहरण के लिए, वर्जीनिया विश्वविद्यालय के पैथालॉजी विभाग के चेयरमेन डा. इआन स्टीवेन्सन (Dr. Ian Stevenson) ने ऐसे अनेक व्यक्तियों के मामलो (Cases) का अध्ययन किया था जिन्हें अपने पूर्वजन्म के कर्मों के बारे में ज्ञान था और उनके विवरणों के आधार पर निष्पक्ष अन्वेषण करने पर पता चला कि वे सही थे।

'नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेन्टल हेल्थ एण्ड न्यूरो साइन्सेज' बंगलौर के निदेशक डा. आर. एम. वर्मा और डा. एच. एन. मूर्थी ने ऐसे 16 व्यक्तियों के मामलों (Cases) की सूक्ष्म जाँच कर यह स्वीकार किया था कि इन लोगों ने पूर्वजन्म की जिन घटनाओं, स्थानों, व्यक्तियों आदि के बारे में बताया था, वे सभी सत्य थे।

विदेशों में भी पूर्व जन्म के बारे में सूक्ष्म खोजबीन की जा चुकी है, उदाहरणार्थ गिना सर्मिनारा (Gina Cerminara) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'मेनी मैंसन्स' (Many Mansions) में पूर्वजन्मों की सत्य घटनाओं का उल्लेख कर यह सिद्ध किया है कि यह धारणा सही है और पूर्वजन्मों के कर्मों का प्रभाव वर्तमान जीवन पर पड़ता है। पूर्वजन्म के बारे में जानने के लिए एम. वी. कामथ की (Philosophy of Life & Death) पढ़िए।

इस प्रकार परमात्मा प्रत्येक जीवात्मा को अपनी चेतना का विकास करने का पूरा अवसर देता है। यह पूर्ण विकास है- अपने परमानन्द से पूर्ण आत्मस्वरूप को समझना तथा अनुभव करना। अत: हस्तरेखा शास्त्र व्यक्ति को अपनी चेतना का विकास करने की प्रेरणा देता है। यह प्रेरणा उसे अपने विचारों तथा कर्मों में श्रेष्ठता लाने का मार्ग दिखाती है।

हस्तरेखा शास्त्र की उपयोगिता (Utility of Palmistry)

अपनी मानसिक रुचियों और सम्भावनाओं की जानकारी: इस शास्त्र के द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि हमारा मानसिक और आर्थिक झुकाव किस प्रकार के विषयों में है। हमारा मूल स्वभाव विज्ञान, कला, साहित्य, व्यापार आदि किस विषय की ओर सबसे अधिक है। उसमें क्या और किस प्रकार की बाधाएँ हैं। उन्हें किस प्रकार दूर किया जा सकता है? अपने स्वभाव अनुसार व्यवसाय या कोई अर्धोत्पादन कार्य अपनाने पर व्यक्ति को उसमें शीघ्र सफलता मिलती है।

अपने जीवन में आने वाली बाधाओं की पूर्व जानकारी होने से हम अपने आपको उनके लिए पहले से तैयार कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में आपको एक आपबीती सत्य घटना सुनाता हूँ।

मेरे स्व. पिता श्री नन्दकिशोर एक अच्छे तथा प्रसिद्ध पॉमिस्ट थे। उन्हें इसका इतना शौक था कि लोगों के नि:शुल्क हाथ देखते और भविष्य बताते थे। नगर के अनेक प्रसिद्ध लोग उनसे सलाह लेने आते रहते थे। उनको देखकर मुझे भी इसका शौक लग गया। मैंने उनकी हस्तरेखा शास्त्र की पुस्तकों को चुपचाप पढ़ना और मित्रों के हाथ देखने शुरू कर दिये।

जब मैं हाईस्कूल में था, मन में विचार आया कि अपना हाथ पिताजी को दिखाऊँ और पूछूँ कि किस यूनिवर्सिटी को पढ़ने जाऊँ क्योंकि उस समय हमारे कस्बे उरई में सिर्फ इण्टरमीडियट तक शिक्षा देने वाले कॉलेज थे। दो साल बाद मुझे कानपुर या लखनऊ जाना ही था। मेरा एक मित्र लखनऊ यूनिवर्सिटी में पढ़ रहा था। क्यों न पिताश्री से अभी उनकी सलाह ले ली जाये?

मेरे पिताजी उस समय एक अच्छे सरकारी पद पर थे। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी थी और मुझे पूरा विश्वास था कि वह मेरी बात को मान लेंगे।

जब मैंने अपनी बात उनके सामने रखी तो बोले, 'अच्छा जरा अपना दाहिना हाथ दिखाना।' मैंने हाथ आगे बढ़ा दिया। पिताजी हँसी के मूड में लग रहे थे पर मेरा हाथ देखने के बाद कुछ गम्भीर हो गये। बोले, 'बायाँ भी दिखाओ।' मेरे दाहिने-बायें हाथ को थोड़ी देर देखने के बाद वह गम्भीरतापूर्वक कुछ हिसाब लगाते रहे, फिर बोले 'मैं तुम्हारे लिए कुछ करना भी चाहूँ तो कर नहीं सकता।